परिणाम बनाम वादे

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- एम.के नारायणन (पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और पश्चिम बंगाल के पूर्व गवर्नर)

24 अक्टूबर, 2018

जहाँ एक तरफ रूस भारत के साथ अपने संबंधों को और अधिक मजबूत करने का विचार कर रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ अमेरिका चाहता है कि भारत रणनीतिक विकल्प का निर्माण करे।

इस महीने की शुरुआत में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की दिल्ली की यात्रा 24 घंटों से भी कम समय तक रही थी, जो सितंबर में अमेरिकी विदेश मंत्री माइक आर पोम्पिओ और रक्षा सचिव जेम्स एन. मैटिस द्वारा भारतीय समकक्षों, सुषमा स्वराज और निर्मला सीतारमण के साथ मंत्रिस्तरीय वार्ता 2+2 में भाग लेने के एक महीने बाद ही हुआ।

शिखर सम्मेलन और संवाद

भारतीय प्रधानमंत्री और रूसी राष्ट्रपति के बीच शिखर सम्मेलन अब एक वार्षिक कार्यक्रम बन गया है और इस प्रोटोकॉल पर वर्ष 2005 में श्री पुतिन और द्वारा सहमति हुई थी। शिखर सम्मेलन ने अक्सर शानदार सफलताएँ प्राप्त की है। उदाहरण के लिए वर्ष 2009 में दिमित्री मेदवेदेव और मनमोहन सिंह के बीच हुई बैठक में कई वर्षो से लंबित पड़ी रूसी विमान वाहक गोर्शकोव (बाद में नाम बदलकर विक्रमादित्य कर दिया गया) के सौदे को मंजूरी मिली और, नवीनतम उदाहरण में, 5.4 बिलियन डॉलर के एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली का सौदा संभव हो सका।

दूसरी तरफ, भारत और अमेरिका के बीच हालिया 2 + 2 वार्ता एक नई अवधारणा है और इसे एक पथ-भंग करने वाली घटना के रूप में सम्मानित किया गया है और यह प्रारंभिक बैठक स्पष्ट रूप से श्री पुतिन की यात्रा से ज्यादा संबंधित है।

2 + 2 वार्ता- एक ऐसा प्रारूप है जहाँ अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया समेत कुछ करीबी सहयोगियों के साथ शामिल है, ने यह धारणा दी है कि भारत यू.एस. के प्रभाव के भीतर आ गया है, जो रूस से खुद को अलग कर रहा है। हाल ही में भारत ने संचार संगतता और सुरक्षा समझौते (Communications Compatibility and Security Agreement &COMCASA) पर हस्ताक्षर करके इस बात की धारणा को और बढ़ाया दिया है। हालांकि, भारत अभी भी रूस के साथ घनिष्ठ संबंधों की प्रशंसा करता है, जो इसके सबसे अधिक भरोसेमंद सहयोगियों में से एक है।

2 + 2 वार्ता के दौरान किए गए वादे के साथ पुतिन-मोदी शिखर सम्मेलन के परिणाम की तुलना शायद भविष्य में क्या झूठ बोलने का एक वास्तविक सूचकांक हो सकता है। यह फिर भी उपक्रम के लायक हो सकता है। शिखर सम्मेलन के मेगा मिसाइल रक्षा सौदे ने यू.एस. से भावी रक्षा अधिग्रहण के संबंध में स्पष्ट रूप से 2 + 2 वार्ता में किए गए किसी भी वादे को धूमिल कर दिया है।

रूसी दृढ़ता

पुतिन-मोदी शिखर सम्मेलन से कई अन्य ठोस परिणाम भी सामने आये है। भारत और रूस ने असैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग का विस्तार करने के लिए हस्ताक्षर किए और रूसी परमाणु रिएक्टरों के लिए दूसरी साइट पर सहमति व्यक्त की। इन्होने मानव अंतरिक्ष-उड़ान के क्षेत्र में संयुक्त कार्यक्रम के एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिससे भारतीय अंतरिक्ष यात्री रूस में प्रशिक्षित किए जा सकें।

वे एशिया के सभी देशों और प्रशांत और भारतीय महासागरों के क्षेत्रों में सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला के गुणों पर भी सहमत हुए हैं। यह एक स्पष्ट हितों की पारस्परिकता का प्रदर्शन करना प्रतीत होता था।

2 + 2 वार्ता, भारत-यू.एस. के रिश्ते की प्रकृति में एक प्रतिमान परिवर्तन को दर्शाती है। इसलिए इस पर अधिक बेहतर ढंग से ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि अमेरिका भारत को लुभाने की कोशिश करता रहता है, जो केवल कुछ ही समय के लिए कार्य करता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका ने एशिया-प्रशांत को भारत-प्रशांत के रूप में बदल दिया था।

इसके अलावा, इसने पाकिस्तान को अमेरिकी सुरक्षा सहायता से 1.5 बिलियन डॉलर से अधिक की सहायता राशि पर रोक लगा दी थी, जिसके कारण पाकिस्तान को वर्ष 2019 में केवल 150 मिलियन डॉलर ही प्राप्त हुए। गौरतलब हो कि यूएस-भारत आर्थिक सहयोग दो दशकों के भीतर तेजी से बढ़ रहा है, जिसमें भारत और अमेरिका के बीच कुल वस्तु और सेवाओं का व्यापार बढ़ा है अर्थात् जो 1995 में 11.2 बिलियन डॉलर था वह वर्ष 2017 में बढ़कर 126.2 बिलियन डॉलर हो गया था।

इस अवधि के दौरान भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में भी काफी वृद्धि हुई थी। वैसे देखा जाये तो भारत को लुभाने के लिए फेंकी गयी सबसे महत्वपूर्ण जाल प्रमुख रक्षा भागीदार की स्थिति प्रदान करना था।

2 + 2 वार्ता का अंतर्निहित विषय, चीन की रणनीति की संभावित रोकथाम को तैयार करने के उद्देश्य से अधिक संबंधित है, और भारत भी इस प्रयास में अमेरिका को अपना साझेदार बनाने के लिए सदैव तैयार रहता है। वर्तमान में, अमेरिका चीन को अपनी सर्वोच्चता के लिए एक बड़ी चुनौती और काउंटर-इंटेलिजेंस परिप्रेक्ष्य से अमेरिकी हित के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण खतरा माना जाता है।

अमेरिका निश्चित रूप से कुछ समय से चीन को कमजोर साबित करने की तैयारी कर रहा है। चीन अमेरिका के लिए खतरा इसलिए भी है क्योंकि चीन के पास अपने रक्षा विभाग के लिए दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रक्षा बजट है, सबसे बड़ी स्थायी सेना, तीसरी सबसे बड़ी वायु सेना, और साथ ही यह तेजी से अपनी नौसेना का विस्तार कर रही है।

देखा जाये तो, चीनी नौसेना की एंटी-एक्सेस क्षमताओं और इसकी क्षेत्र अस्वीकार रणनीति के लिए अमेरिका द्वारा विशिष्ट उल्लेख भी किया जाता रहा है, जो शायद हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में भारत जैसे देशों के लिए चीनी नौसेना के बढ़ते खतरे से संबंधित एक चेतावनी भी हो सकती है।

पुतिन-मोदी शिखर सम्मेलन के परिणामों में मतभेद और 2 + 2 वार्ता में किए गए वादे इस प्रकार स्पष्ट हैं। रूस अनिवार्य रूप से भारत के साथ संबंध बनाने की मांग कर रहा था जो कई सालों से अस्तित्व में है। यू.एस. चाहता था कि भारत एक अमेरिकी प्रिज्म के माध्यम से बड़े पैमाने पर विदेश नीति दृष्टिकोणों से देखे और फिर उसके बाद चुनाव करें।

स्थिति इस तथ्य से और भी काफी जटिल हो जाती है कि आज विश्व को शीत युद्ध का सामना करना पड़ रहा है। चीन की आर्थिक शक्ति और इसकी बढ़ती सैन्य शक्ति का उदय, और रूस के पुनर्जन्म इस स्थिति के लिए महत्त्वपूर्ण संकेतक हैं।

निस्संदेह, भारत और चीन दोनों देशों के बीच सीमा के साथ कई बिंदुओं पर समस्याओं सहित कई मुद्दों पर मतभेद हैं। एशिया के नेतृत्व के लिए उनके बीच कई विवादित मुद्दे भी है। फिर भी, न तो भारत और न ही चीन खुले संघर्ष के लिए तैयार दिखाई देता है क्योंकि यह दोनों देशों को काफी हद तक नुकसान पहुचायेगा।

भारत दक्षिण चीन सागर में चीन के क्षेत्रीय विस्तार को सक्रिय रूप से विरोध करने और आईओआर में नौसेना की गतिविधियों को विस्तारित करने से रोकने में अमेरिका के किसी भी मुद्दे से अनजान नहीं है।

भारत को अपने सर्वोत्तम हितों में गहराई से विचार करने की जरूरत है। इसे खुद को इस धारणा से बचना चाहिए कि लोकतंत्र, बड़े पैमाने पर, बेहतर विकल्प प्रदान करते हैं। इसे अपने निर्णय को बेहतर परिस्थितियों के तर्क से निर्धारित करने की आवश्यकता है। रणनीतिक महत्त्वाकांक्षा उस स्थिति का जवाब नहीं हो सकता है जिसका सामना आज भारत कर रहा है।

GS World टीम...

2+2 डायलॉग चर्चा में क्यों?

- लगातार टलती आ रही भारत और अमेरिका के बीच 2+2 डायलॉग या बातचीत 6 सितंबर को नई दिल्ली में होने वाली है।
- पिछले कुछ सालों के दौरान भारत और अमेरिका के बीच गहराते संबंधों को यह बातचीत एक और अहम मोड़ दे सकती है।
- बातचीत में भारत की ओर से रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज हिस्सा लेंगी, जबकि अमेरिका की ओर से रक्षा मंत्री जेम्स मेटिस और विदेश मंत्री माइक पोम्पियो यह पहल करेंगे।

2+2 डायलॉग क्या है?

- यदि दो देशों के बीच एक साथ ही दो-दो मंत्रिस्तरीय वार्ताएँ आयोजित की जाएँ तो इसे 2+2 संवाद मॉडल का नाम दिया जाता है।
- भारत-ऑस्ट्रेलिया 2+2 संवाद मॉडल में दोनों पक्षों के विदेश और रक्षा मंत्रालयों के सचिवों के बीच वार्ता हो रही है।
- विदित हो कि इस संवाद मॉडल के तहत भारत और जापान की भी वार्ता हुई है।

दोनों देशों के बीच व्यापार

- भारत से अमेरिका को हर साल लगभग 1.5 अरब डॉलर के स्टील और एल्युमिनियम उत्पादों का निर्यात किया जाता है।
- वर्ष 2016-17 में भारत से अमेरिका को किया जाने वाला कुल निर्यात 42.21 अरब डॉलर, जबकि कुल आयात 22.3 अरब डॉलर का था।

भारत और अमेरिका के बीच बढ़ती दरार का कारण

- भारत ने ईरान से सभी तेल आपूर्ति पर कटौती करने से इंकार कर दिया है, जिससे अमेरिका नाराज है।
- भारत द्वारा रूसी एस-400 मिसाइल प्रणाली की खरीद की योजना पर।
- भारत द्वारा यू.एस. से आयातित कई वस्तुओं पर उच्च शुल्क लगाना।
- विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में कई मुद्दे/विवाद; व्यापार संरक्षणवाद; नए अमेरिकी स्टील और एल्यूमीनियम टैरिफ पर विवाद; चिकित्सा उपकरणों पर भारतीय मूल्य में कटौती पर विवाद।

काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सैक्शंस एक्ट (सीएएटीएसए)

- इसे जनवरी, 2018 में लागू किया गया था। यह ट्रम्प प्रशासन को रूस के रक्षा या खुफिया क्षेत्रों के साथ महत्त्वपूर्ण लेनदेन में शामिल संस्थाओं को दंडित करने का अधिकार देता है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. हाल ही में भारत ने निम्नलिखित में से किस देश के साथ संचार संगतता और सुरक्षा समझौता (COMCASA) पर हस्ताक्षर किया है?

(a) रूस (b) ऑस्ट्रेलिया
(c) संयुक्त राज्य अमेरिका (d) जापान

2. अमेरिका भारत को अपने पक्ष में लुभाने की प्रयास कर रहा है इन प्रयासों में निम्नलिखित में से शामिल है-

1. अमेरिका द्वारा भारत को प्रमुख रक्षा भागीदार का दर्जा प्रदान करना
2. अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को दी जाने वाली सुरक्षा सहायता में कटौती
3. एशिया-प्रशांत को भारत-प्रशान्त के रूप में परिवर्तन

नीचे दिये गये कूट के प्रयोग से सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. हाल के कुछ वर्षों से अमेरिका भारत को अपने पक्ष में लुभाने की कोशिश कर रहा है। कुछ राजनीतिक विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि भारत अमेरिका के प्रभाव में आ चुका है। क्या आप इस कथन से सहमत है? न्यायसंगत उत्तर दीजिए।

(शब्द-250)

नोट :
23 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) होगा।